Vol 3

III - 34 - 3

3

3/23

HINDUSTAN

MAZDOOR SEVAK SANGH

विषय

विभाग

क्रम

1950

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

वी. वी. द्रविड
ऑर्गनायझिंग सेक्रेटरी
राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस

श्रम - शिबिर, स्नेहलतागंज,
इन्दौर. ११.११.१९५०

पूज्य सरदार श्री की सेवामें सविनय प्रणाम।

मैं यहाँ सात दिन पूर्व जमशेदपुर से लौट आया। तब यह समाचार मालूम हुआ कि जवाहर-जयंती के उपलक्ष्य में किदवाई सा. यहाँ आनेवाले हैं। इस विषय में अधिक जाँच करनेपर संबंधित लोगोंने कहा कि सूर्यनारायण शर्मा, पत्रकार दिल्ली गये थे और उन्होंने किदवाई सा. को यहाँ आनेकेलिये कहा था। इसके बाद नगर कॉंग्रेस को किदवाईजी के आनेकी सूचना तार से मिली। ऐसी स्थितिमें हमारी रीति के अनुसार उचित है वह सब किया जा रहा है। किन्तु मैंने यहाँके जबाबदार व्यक्तियोंको यह हिदायत दे दी है कि वे यह खबरदारी रखें कि इस अवसर पर किसी भी प्रकार की खटपट खडी न हो सके। यह आशंका साथवाले कार्डको देखने से समझ में आ जायगी। मैं व रामसिंहभाई अपनी ओरसे सदैव सावधान रहते हैं कि किसी प्रकारकी गडबडी न हो और हमारा मजदूरोंका और कॉंग्रेस का काम शांतिपूर्वक और सीधे-सच्चे रास्तेसे चले। आप निश्चिंत रहें।

विनीत
वी.वी. द्रविड

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

दैनिक
इन्दौर समाचार

इन्दौर बुधवार तारीख ८-११-५० (2)

कांग्रेस में प्रजातन्त्री मोर्चा

कांग्रेसी शासन व संस्था में आई अनैतिक प्रवृत्तियों और दल बंदियों को मिटा कर कांग्रेस के लक्ष्य व आदर्शों की पूर्ति के लिये एक युग तक कांग्रेस के महामंत्री रहे नेता आचार्य जे० बी० कृपलानी ने कांग्रेस प्रजातंत्री मोर्चा कायम किया है। कांग्रेस अध्यक्ष पद के चुनाव से प्रकट है कि यदि सरकारी प्रभाव से चुनाव मुक्त रहता तो आचार्य श्री के मस्तक पर कांटों का ताज कांग्रेसियों को रखना ही होता। आचार्य जी कट्टर आदर्शवादी कांग्रेसी हैं और वे अपने सिद्धांतों के लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने से भी नहीं हिचकते हैं।। नेहरु सरकार से मत भेद होने पर आचार्य कृपलानी ही थे कि जिन्होंने कांग्रेस प्रमुख पद से त्याग पत्र दिया था—जब कि अनेक ऐसे नेता हैं जो कि पदों के लिये सिद्धांतों की कभी परवाह नहीं करते अस्तु।

प्रजातंत्री मोर्चा कायम हुआ यह कांग्रेस की प्रगति व भविष्य के लिये एक शुभ कार्य हम मानते हैं। ६६ वर्ष से बही आ रही कांग्रेस की भगीरथी में सत्ता के बाढ़ से आई गंदगी को मिटाना आवश्यक तो था ही। गंदगी का विरोध कांग्रेसियों होना यही उसकी प्रगति के लिये एक विश्वास है। युक्त प्रान्त में जन कांग्रेस की स्थापना इसी बात का प्रमाण है। आज तो हर प्रांत में कांग्रेस की स्थापना इसी बात का प्रमाण है। आज तो हर प्रांत में कांग्रेस में दलबंदी है और दलबंदी ऐसी कि कांग्रेस को मिटा कर स्वार्थ को सिद्ध करने की प्रबल भावना के साथ। यदि सत्तारूढ़ कांग्रेस के मान्य नेता दलबंदी और उसके कारण को मिटाने में स्वयं को असमर्थ पावेंगे तो उसका परिणाम यही होगा। हमें बहुत दुख है कि बाबू पुरुषोत्तमदास जी के कांग्रेस प्रमुख चुने जाने के बाद भी इस ओर कोई प्रभावकारी कदम उनकी ओर से नहीं उठाया गया है। हमारे प्रांत में भी ऊपरी तौर से दलबंदी का ज्वालामुखी धधकता तो दिखाई नहीं दे रहा है किन्तु उस शांत ज्वालामुखी की छिपी हुई लपटों को बुझाने की ओर न तो प्रांतपति जी का ध्यान है और न उनकी नई कार्यकारिणी का। बल्कि हाल में जो अनेक उपसमितियाँ बनी हैं, उनके संयोजकों के नामों को पढ़ जाने से शंका की काफी गुंजाइश होती है। इस बारे में हमें अभी तो कुछ नहीं कहना। हम तो चाहते हैं कि देश में चाहे जो हो, किंतु मध्यभारत में दलबंदी का दबदबा न रहे। शंका का उठना भी प्रांत के लिये दुर्भाग्य की बात ही है। शंका के ऊपर उठकर काम होना ही आज अभिष्ट है।

जो हो, सत्तारूढ़ दल की कमजोरियों से नया प्रजातंत्री मोर्चा बना है। श्री किदवई, डा० घोश, आदि सैकड़ों तपस्वी व खरे नेताओं का उसमें सहयोग है। हो सकता है कि जन कांग्रेसी भी उसी में अपने आपको मिला ले। और इसी तरह कांग्रेस के वर्तमान अधिनायकों की नीति रीति से असंतुष्ट अन्य कांग्रेसी नेता भी इसी दल के झण्डे के नीचे एकत्र हो, एक प्रबल विरोधी दल के रूप में खड़ा हो जावे।

इस मोर्चे की जो ४ सूत्री धारा देखने को मिली उसमें मुख्य है आगामी चुनावों में अनैतिक या अयोग्य कांग्रेसी उम्मीदवारों का विरोध करना। आज कांग्रेस में खुशामद या दलबंदी के आधार पर किसी भी व्यक्ति का किसी भी ऊंचे से ऊंचे पद पर पहुंच जाना बिल्कुल सरल बात होगई है। संसद, प्रान्तीय विधान सभा, मंत्री मंडल और कांग्रेस कार्यकारिणी के अनेक सदस्यों को देखने के बाद यह बात सवासोलह आने सही हो जाती है। सुयोग्यता, सेवा, सच्चाई और सिद्धान्तवादिता की प्रतिष्ठा गिरती ही चली आ रही है और दुर्भाग्य की बात यह है कि कोई इसे रोक नहीं पाता अथवा रोकने की कोशिश नहीं करता चुनाव में स्वयं को उम्मीदवार बनाने के लिये खटपट अभी से शुरू होगई है। कुछ कांग्रेसी तो दलबंदी के बल पर कुछ रुपयों के बल पर और कुछ खुशामद के बल पर स्वयं को आगे लाने के लिये प्रचार कर रहे हैं। उज्जैन से तो एक नया दैनिक व साप्ताहिक का प्रकाशन होने जा रहा है। और भी अनेक पत्र निकलेंगे। कांग्रेसी कांग्रेसी को गिराने के लिये गैर कांग्रेसी एवं कांग्रेसी विरोधियों को मदद करेंगे, जैसा कि उज्जैन व महीदपुर क्षेत्र में पिछले दिनों से देखा जा रहा है।

इस स्थिति में बहुत ही जरूरी है कि कांग्रेस की टिकिट पर योग्य व ईमानदार जनसेवक खड़ा किया जावे ताकि कांग्रेस-विरोधी उम्मीदवार को वोट न मिल सकें। किंतु यदि ऐसा न हो और दलबंदी का नारा बुलन्द हुआ तो कांग्रेस की प्रतिष्ठा बचाने के लिये सच्चे कांग्रेसियों को कड़ुआ कार्य करना ही होगा। ईमानदार कांग्रेसी हारकर भी संस्था को लाभ ही पहुंचाता है जब कि बेईमान व्यक्ति जीतकर भी संस्था को कलंकित करता है। अतः हर स्थिति में सत्य व अहिंसा का नाम लेने वालों को चुनाव में अपने उम्मीदवार को चुनने के कार्य में अग्नि परीक्षा देनी होगी।

कांग्रेस की निरंकुशता और दोषों के बढ़ते आने से प्रजातंत्री

यही कामना है कि ... मिल जावे और ... जावे। कांग्रेस के संगठन की चट्टान ऐसी मजबूत हो ...

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

लिये एक युग तक कांग्रेस के महामंत्री रहे नेता आचार्य जे० बी० कृपलानी ने कांग्रेस प्रजातंत्री मोर्चा कायम किया है। कांग्रेस अध्यक्ष पद के चुनाव से प्रकट है कि यदि सरकारी प्रभाव से चुनाव मुक्त रहता तो आचार्य श्री के मस्तक पर कांटों का ताज कांग्रेसियों को रखना ही होता। आचार्य जी कट्टर आदर्शवादी कांग्रेसी हैं और वे अपने सिद्धांतों के लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने से भी नहीं हिचकते हैं। नेहरु सरकार से मत भेद होने पर आचार्य कृपलानी ही थे कि जिन्होंने कांग्रेस प्रमुख पद से त्याग पत्र दिया था—जब कि अनेक ऐसे नेता हैं जो कि पदों के लिये सिद्धांतों की कभी परवाह नहीं करते अस्तु।

प्रजातंत्री मोर्चा कायम हुआ यह कांग्रेस की प्रगति व भविष्य के लिये एक शुभ कार्य हम मानते हैं। ६६ वर्ष से बही आ रही कांग्रेस की भगीरथी में सत्ता के बाढ से आई गंदगी को मिटाना आवश्यक तो था ही। गंदगी का विरोध कांग्रेसियों होना यही उसकी प्रगति के लिये एक विश्वास है। युक्त .. जन कांग्रेस की स्थापना इसी बात का प्रमाण है। आज त हर प्रांत में कांग्रेस की स्थापना इसी बात का प्रमाण है। आज तो हर प्रांत में कांग्रेस में दलबंदी है और दलबंदी ऐसी कि कांग्रेस को मिटा कर स्वार्थ को सिद्ध करने की प्रबल भावना के साथ। यदि सत्तारूढ कांग्रेस के मान्य नेता दलबंदी और उसके कारण को मिटाने में स्वयं को असमर्थ पावेंगे तो उसका परिणाम यही होगा। हमें बहुत दुख है कि बाबू पुरुषोत्तमदास जी के कांग्रेस प्रमुख चुने जाने के बाद भी इस ओर कोई प्रभावकारी कदम उनकी ओर से नहीं उठाया गया है। हमारे प्रांत में भी ऊपरी तौर से दलबंदी का ज्वालामुखी धधकता तो दिखाई नहीं दे रहा है किन्तु उस शांत ज्वालामुखी की छिपी हुई लपटों को बुझाने की ओर न तो प्रांतपति जी का ध्यान है और न उनकी नई कार्यकारिणी का। बल्कि हाल में जो अनेक उपसमितियां बनी हैं, उनके संयोजकों के नामों को पढ जाने से शंका की काफी गुंजाइश होती है। इस बारे में हमें अभी तो कुछ नहीं कहना। हम तो चाहते हैं कि देश में चाहे जो हो, किंतु मध्यभारत में दलबंदी का दबदबा न रहे। शंका का उठना भी प्रांत के लिये दुर्भाग्य की बात ही है। शंका के ऊपर उठकर काम होना ही आज अभिष्ट है।

जो हो, सत्तारूढ दल की कमजोरियों से नया प्रजातंत्री मोर्चा बना है। श्री किदवई, डा० घोश, आदि सैकड़ों तपस्वी व खरे नेताओं का उसमें सहयोग है। हो सकता है कि जन कांग्रेसी भी उसी में अपने आपको मिला लें। और इसी तरह कांग्रेस के वर्तमान अधिनायकों की नीति रीति से असंतुष्ट अन्य कांग्रेसी नेता भी इसी दल के झण्डे के नीचे एकत्र हो, एक प्रबल विरोधी दल के रूप में खड़ा हो जावे।

इस मोर्चे की जो ५ सूत्री धारा देखने को मिली उसमें मुख्य है आगामी चुनावों में अनैतिक या अयोग्य कांग्रेसी उम्मीदवारों का विरोध करना। आज कांग्रेस में खुशामद या दलबंदी के आधार पर किसी भी व्यक्ति का किसी भी ऊंचे से ऊंचे पद पर पहुंच जाना बिल्कुल सरल बात होगई है। संसद, प्रान्तीय विधान सभा, मंत्री मंडल और कांग्रेस कार्यकारिणी के अनेक सदस्यों को देखने के बाद यह बात सवा सोलह आने सही हो जाती है। सुयोग्यता, सेवा, सच्चाई और सिद्धान्त वादिता की प्रतिष्ठा गिरती ही चली आ रही है और दुर्भाग्य की बात यह है कि कोई इसे रोक नहीं पाता अथवा रोकने की कोशिश नहीं करता चुनाव में स्वयं को उम्मीदवार बनाने के लिये खटपट अभी से शुरु होगई है। कुछ कांग्रेसी तो दलबंदी के बल पर कुछ रुपयों के बल पर और कुछ खुशामद के बल पर स्वयं को आगे लाने के लिये प्रचार कर रहे हैं। उज्जैन से तो एक नया दैनिक व साप्ताहिक का प्रकाशन होने जा रहा है। और भी अनेक पत्र निकलेंगे। कांग्रेसी कांग्रेसी को गिराने के लिये गैर कांग्रेसी एवं कांग्रेसी विरोधियों को मदद करेंगे, जैसा कि उज्जैन व महीदपुर क्षेत्र में पिछले दिनों से देखा जा रहा है।

इस स्थिति में बहुत ही जरूरी है कि कांग्रेस की टिकिट पर योग्य व ईमानदार जनसेवक खड़ा किया जावे ताकि कांग्रेस-विरोधी उम्मीदवार को वोट न मिल सकें। किंतु यदि ऐसा न हो और दलबंदी का नारा बुलन्द हुआ तो कांग्रेस की प्रतिष्ठा बचाने के लिये सच्चे कांग्रेसियों को कडुआ कार्य करना ही होगा। ईमानदार कांग्रेसी हारकर भी संस्था को लाभ ही पहुंचाता है जब कि बेईमान व्यक्ति जीतकर भी संस्था को कलंकित करता है। अतः हर स्थिति में सत्य व अहिंसा का नाम लेने वालों को चुनाव में अपने उम्मीदवार को चुनने के कार्य में अग्नि परीक्षा देनी होगी।

कांग्रेस की निर्बलता और दोषों के बढते जाने से प्रजातंत्री मोर्चों की तरह यदि अन्य और दल कायम होते गये तो यह कांग्रेस के लिये खतरे के कारण बन जावेंगे। मोर्चे में अनुशासन पालन एवं कांग्रेस की प्रतिष्ठा को बढाने की भावना मुख्य रूप से रहनी चाहिये। यदि ऐसा नहीं हुआ तो मोर्चा कांग्रेस ही नहीं राष्ट्र के लिये भी घातक बन जावेगा। हमारी तो आज भी यही कामना है कि ... मिल जावे और ... जावे। कांग्रेस के संगठन की चट्टान ऐसी मजबूत हो ... में विरोधी दलों के लिये वह लोहे की दीवार जैसी हो और उससे टकराने वालों के लिये खासने के अलावा अन्य मार्ग न रहे।

कांग्रेस प्रमुख व प्रांतपतियों को हम अब भी चेतावनी देते हैं कि वे देरी होने से पूर्व जागकर कांग्रेस के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न करें।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

PHONE: 43817

TELE: SHRAMIK

3

Indian National Trade Union Congress

CENTRAL OFFICE

Ref No. L/14-A/3373

. QUEENSWAY
New Delhi

3rd November, 1950.

Respected Sardar Sahib,

I have already despatched to you a copy of Presidential Address and the General Secretary's Report presented at the Third Annual Session of the Indian National Trade Union Congress. I am, now, herewith sending you a copy of the resolutions passed on the occasion.

With best regards,

Yours sincerely,

Harihar Nath Shastri

(Harihar Nath Shastri M.P)
GENERAL SECRETARY.

Shri Sardar Vallabhbhai Patel,
Deputy Prime Minister,
Government of India,
NEW DELHI.

Encl: 1.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

4

INDIAN NATIONAL TRADE UNION CONGRESS

THIRD SESSION

(29TH & 30TH OCT. 1950)

JAMSHEDPUR

DRAFT RESOLUTIONS

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

1

The INTUC condemns the destardly and fatal attack by Communists hooligans on Shri Kalidas Hishi, an INTUC worker of West Bengal and offers its condolence to his relatives.

2

The INTUC expresses its deep sorrow at the havoc and devastation caused in Upper Assam by earthquakes and floods and conveys its heartful sympathy towards the people of Assam. The INTUC appeals to the workers all over the country to contribute their mite to the relief of the sufferers.

3

I. C. F. T. U.

The World Federation of Trade Unions having become an instrument of totalitarian Communist state and denied freedom of thought and action to national trade union organisations functioning on democratic lines, the democratic trade unions, therefore realising the necessaity of a free trade union movement have joined together and founded the International Confederation of Free Trade Unions, the INTUC shares the ideals and objectives of the ICFTU and welcomes its formation and accords its whole-hearted support to that organisation.

4

NEW LABOUR BILLS

The Indian National Trade Union Congress accords its support to the basic principles of the Labonr Bills which provide for the settlement of disputes by negotiation, conciliation and arbitration (without detriment to the right to strike) as they provide the best means for effective redress of grievances of the workers and create conditions for the growth of healthy and stable trade union movement, for the smooth running of industry and for the industrial progress of the country.

This Congress at the same time notes with regret and concern that the Bills include several provisions which are unfair and are bound to prove deterimental to the interests of workers and healthy growth of trade union movement. The INTUC in particular takes serious exception to the inclusion in the Bills of clauses confering unfettered rights to employers to retrench and dismiss workers involvine denial of the right of recourse to concilation and arbitration machinery to civil servants and certain sections of industrial workers and various other clauses.

The INTUC however confidently trusts that as a result of the deliberations of the Select Committee, the defects in the Bills will be removed and that the Bills in their final form when put on the statute book will prove beneficial to the interests of the working class of the country.

5

INTERNATIONAL POLICY

Whereas the Indian National Trade Union Congress is pledged to secure for the toiling masses of India through democratic and non-violent means improved standard of living, due share in the product of their own labour, decent conditions of work and wages, security of employment, and their rightful status in industry and society;

And whereas the Indian National Trade Union Congress is convinced that the maintanence of world peace is an essential pre-requisite to the realisation of these aims;

And whereas these ideals are embodied in U.N.O. Charter;

And whereas the activities of the U.N.O. are in furtherence of and are calculated to promote international peace;

The INTUC appreciates and welcomes the progress made by the U.N.O. and its allied bodies in economic and cultural fields and extent to which it has succeded in warding off aggression and guaranteeing protection to the weaker nations of the world and assuring peace prosperity by collective security and mutual assistance and especially the success achieved by the world democratic forces under the banner of the U.N.O in counteracting the communist aggression on South Korea.

The INTUC views with grave concern the increasing menace to world peace resulting from the aggressive designs of communist totalitariasnism for world domination as manifested by its insidieous activities amongst the economically backward peoples of Asia intended to subvert and disrupt their social order and economic structure through chaos anarchy and bloodshed.

The INTUC at the same time draws the pointed attention of the U.N.O. and its allied organisations to the necessity of paying increased attention to the economic, social, and political factors in the under-developed and backward regions which are the root causes of their internal difficulties and provide fertile breeding ground for the spread of subversive ideas and make them vulnerable to aggression. The INTUC, therefore, stresses the view that the satisfaction of the political aspirations and economic needs of the people and the eradication of poverty, sgnorance and disease, in these areas is a more vital safeguard of world peace than military preparedness.

Government to deal with all malpractices which are leading to rise in prices and causing hardships to the community. In particular all properties involved in black-marketting or illegal hoarding should be confiscated and special Tribunals should be set up to deal summarily with all such offences.

(e) In view of the pawcity of rasources for development, a nationwide campaign should be launched for increasing and mobolising savings with a view to create the necessary capital for industrial development.

(10)

HOLIDAYS WITH PAY

Whereas due to defective provisions regarding holidays with wages in the Indian Factories Act, a very large number of workers have been deprived of the privileges due to them. the INTUC urges upon the Government of India to amend the relevent sections in such a manner that the intentions of the Act are properly carried out viz. workers should get one paid holiday for every 20 days attendance at work.

11

STATE EMPLOYEES INSURANCE

The INTUC resents the undue delay in implementing the provisions of the Sickness Insurance Scheme even though the Corporation, the standing committee and the Medical Benefit Committee were all appointed more than a year ago, and urges on the Government not to attach weight to the opposition from employers and some of the States but immediately give effect to the provisions of the scheme.

12

HOUSING

The INTUC regrets to note that inspite of repeated promises, Government of India have failed to make suitable provisions for housing of industrial workers which has put them to innumerable difficulties particularly in big industrial cities and plantations.

The national aims of maintaining industrial peace and increasing production can hardly be expected to fulfilled when workers have no residence and most of their houses are un-hygenic, ill ventilated, one room tenements without required conveniences.

Having regard to the need for safeguarding and improving the health and efficiency of the working class, this Congress urges on the Govt. to make adequate arrangements for their housing at an early date.

13

INDUSTRIAL TRIBUNAL

It is essential for the success of the principles of Industrial Arbitration that the machinery of adjudication should be easily available to the workers, the disposal of cases

should be speedy and complete, and the decisions should be fully and promtly implemented.

It is however the experience of labour that after the failure of negotations there is undue delay in completion of conciliation proceedings and thereafter in referring cases to Tribunals. The proceedings before the Tribunals and the time taken for delivering judgments after the completion of the hearing is also considerably long.

The INTUC is of the view that reference to industrial Tribunals should be made automatic in case of unions accepting the principle of arbitration and the procedure should be free from technical and procedural delays, and should be governed only by rules of equity and natural justice, and urges on Government to take steps for the quick implementation of awards in case of default by employers and undertake legislation to prevenr delays and evasions on mere technical or legalistic grounds.

14

DEARNESS ALLOWANCE

It is a matter of keen dissatisfaction to the INTUC that inspite of increases in basic wages and the varying amounts of dearness allowances secured by the working class in different industries and regions, it has failed to maintain even its prewar standard of living and its economic position has worsened during the last decade. This is due in part to the customary lag between wages and prices, and the constant inflationary pressure in the country cancelling out at every step any increase in earnings by a more than proportionate increase in prices. The working class under the advice of the INTUC has observed great restraint in refraining from pressing for complete neutralization of every successive stage in the rise in the cost of living, in the hope, and acting on the assurance that the Government would soon take effective steps to bring down the price level and ensure the needed relief to the working class. The INTUC has always expressed its readiness to carry out its obligations under any constructive scheme based on the principle of equality of sacrifice which may be designed to bring about a substantial reduction in the cost of living.

The INTUC regards it as extremely unfortunate that the Government has so far not succeeded in bringing about a fall in the price level or even to curb its rising tendency. The INTUC is constrained in these circumstances to declare that the working class is not in a position to wait and suffer any longer and appeals to the Government to take speedy action to provide full compensation for the rise in the workers cost of living.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Printed at the Mazdur Press, Main Road, Jamshedpur, and published by the General Secretary Indian National Trade Union Congress, Central Office, Camp—Jamshedpur

INDIAN NATIONAL TRADE UNION CONGRESS

THIRD SESSION

(29TH & 30TH OCT. 1950)

JAMSHEDPUR

DRAFT RESOLUTIONS

(6)

RATIONALISATION AND RETRENCHMENT

The INTUC is painfully aware of the fact that employers in different industries are resorting to retrenchment on a large scale in a very unscientific manner under the guise of rationalisation, thereby causing unemployment of a large number of worker sand at the same time increasing the work-load on the remaining employees.

The INTUC is not opposed to proper rationalisation which does not merely mean reduction in the number of workers but includes adoption of improved and scientific methods of purchase, production and sale, reducing charges of management and stoppage of all leakages, wastes and corruption. In the present economic state of the country rationalisation can be justified only to the extent it can be done without creating unemployment and that too with a view to cheapen the products for the consumers and enable the workers to reach a living wage standard.

No retrenchment should be permitted unless it is considered justified and necessary by a Tribunal or Wage Board. And in such cases persons retrenched should be paid adequate gratuity and compensation, training in some alternative occupation and right to preferential re-employment

(7)

CONSTRUCTIVE ACTIVITIES

The INTUC accepts the ideals and principles enunciated by Mahatma Gandhi for the proper and successful functioning of Trade Unions. This Congress therefore calls upon all the unions affiliation to the INTUC to undertake such constructive activities as would develope the individual personality of each worker morally and intellectually through internal efforts and eventually raise his status in society, make him conscious of his civic and political rights and enable him to function not only as an efficient worker but also a responsible citizen.

To achieve the aforesaid purpose, workers should be properly organised not only in the factories mines and workshops but also in their residential localities with a view to undertaking one or more of the following activities for their betterment and all round development :-

Conducting infant schools—adult classes—libraries—gymnasiums co-operative societies and banks—organising volunteers—arranging exursions—giving medical aid including maternity aid—keeping the mohalla clean—settling disputes amicably through panchayats—ridding the area from unsocial factors—recording and redressing municipal complaints organising temperance movement—holding discussions on political and economic issues and above all achieving complete unionisation.

(8)

CONTRACT LABOUR

It is the considered view of the INTUC that workers employed through contractors are exploited and their conditions of work and wages are unfair and unregulated. It therefore, requests the Government of India to statutorily abolish the system of contract labour wherever there is continuous and permanent employment, and in other cases to safeguard the interests of contract labour by prescribing wages and condition of work to be observed by the contractors.

(9)

ECONOMIC SITUATION

The Indian National Trade Union Congress views with grave anxiety the unabatting deterioration in the economic situation of the country as revealed in constant rise in cost of living attended with acute hardship to the working class and the lower middle section of the people. While this congress is alive to the fact that national calamities and natural causes have greatly hamoered the task of economic recovery of the nation, yet it is definitely of opinion that the present situation is to a considerable extenc attributable to the weak and hesitent policy of the Government to the deteriment of the consumers in the efficient working of the control machinery and failure to effectively counteract hoarding and black marketting and inability to narrow down disparity in income levels.

With a view to put a stop to further deterioration and to bring about a steady improvement in the economic situation, the INTUC places the following concrete proposals :—

'(a) The National Planning Commission should devise measures for the quick development of the economy of the country by fully utilising all natural measures and installed industrial capacity, by tapping all possible sources of finance, and by harnessing the skill and working capacity of all sections of the community. The Commission should also devise ways and means to narrow down disparity in incomes and thereby desise measures to effect economies in administration and also promote savings. In respect of sectors of economic activities which can be advantageously undertaken by the State as public enterprise, steps should be devised to ensure that such undertakings are run efficiently for the benefit of the community as a whole.

(b) A permanent National Industrial Board composed of representative of employers, workers and consumers should be set up to watch and ensure effecient working of the industrial production of the country keeping in view to the over all interest of the community.

(c) Effective steps should be taken to eleminate speculative activities in all spheres where it is leading to rise in prices.

(d) Stringent and drastic action should be taken by the

ARCHIVES OF INDIA

8

L. M. Wakhare
Advocate. See I. N. T. U. C.
PRESIDENT.
Madyapradesh.
Rastriya. Koyala Khadan
Majdur Sangha
WORKING PRESIDENT.
Provincial. Rastriya Manganese.
Mine Worker's Union.

Most Important

Itwari NAGPUR.

D./ 3. 11. 1950

8369/50 S.
6/11/50

प्रिय सरदारजी,

आप की वर्षगांठके शुभअवसर हजारों लाखों व्यक्तिओंने आपको बधाई दी होगी.

मेरे समान एक छोटेसे कॉं. कार्यकर्ता और मजदूर कार्यकर्ताकी भी बधाई आप अपने हृदयमें सम्मिलित कर लीजियें.

हम आपको अपनी सेवा दे सकते हैं. आप हमको रक्षा दे सकते और हम मांग भी सकते हैं.

मेरी भावना यही है कि तमाम हिंदुस्थानके भगवान आप कार्यशील हैं. ना कोंग्रेसमें, ना नोकरीमें, ना मिनिस्टरीमें, ना असेंब्लीमें ना इधर उधर!

महात्माजीने आपने साथ आपके समान सिंह, lions, हीर तयार किये! उनके बाद देशका कार्य चल सका.

आपके बाद Second Rank कहां है? कितने बुद्धिशील नौजवान आज देशमें तयार हैं सेवाके लिये.

यहि बातमैंने तीनसालके पहले —

आपके उमेदार Assembly की Seat मांगने वाले कहाँ हैं.

One man, one vote.

फिरसे मौका आया है.

देश आपके तरफ देख रहा है.

किसान मजदूर आशा कर रहे हैं.

गरीब- अमीर, सब इन्सान कॉंग्रेस की ओर देख रहे हैं.

हमारी मनोकामना पुरी होगी, परमात्मा आपको दीर्घायु दे.

आपका

ग. मा. वरवे.

P.T.O.

Personal & Immediate

L. M. Wakhare
Advocate, Sec I. N. T. V. C.
PRESIDENT.
Madyapradesh.
Rastriya, Koyala Khadan
Majdur Sangha
WORKING PRESIDENT.
Provincial, Rastriya Manganese.
Mine Worker's Union.

Itwari NAGPUR.

9

D./ 3.11. 1950

प्रार्थना

1 छिंदवाड़ा जिल्हा (मध्यप्रदेश) राष्ट्रीय कोयलाखदान
मजदूर vs डेविडसन एंड कंपनी का
मजदूरके मांगोंका झगड़ा मजदूरमंत्री और
मजदूर ऑफिसरोंमें पड़ा है.
I.N.T.U.C. की इसरवाड़ी ओरसे
मांगें पेश है. हम चाहते है कि
मामला Industrial Tribunal
के तरफ दिया जाये.
कानून दे सकते है.
दो महीनेसे झगड़ा रुका है. लेकिन
Tribunal देनेकोभी इनकार. तो
राष्ट्रीयमजदूर कॉं. (I.N.T.U.C.) क्या
करे रहीं है श्री. खड़ीकर, मा. ... वालोंके
वालोंके ऊपर विजय प्राप्त करनेका
यही हमको मोका है. फिरभी
इनकार. श्री. जगजीवन रामजीको
मैंने कईबार प्रार्थनाकी लेकिन

मालूम ही नहीं. इसने कहा Industrial Tribunal नहीं तो Board of Enquiry के अप्वाइंट करें. कुछ तो करें.

Fact finding Committee के रिपोर्ट के खिलाफ, Conciliation Board के अवार्ड के खिलाफ मालिक अब काम कर रहे हैं. कैसा मालूम है. फिर भी आप हमारा I.N.T.U.C. के साथ. आप देखिये. इसलिये Tribunal के लिये

2 [illegible] मजदूरों का [illegible] है. वहां भी Tribunal देने से इनकार. [illegible] दिया और [illegible] नहीं [illegible] है. [illegible] सहयोग नहीं.

Tribunal or Board of Enquiry को इनकार, तो फिर हम क्या करें

Being a Vice-President of I.N.T.U.C. & Sardar of your country, I appeal, please write Jagjivan Ramji to give us Tribunal or Board of Enquiry. Please excuse.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

10

New Delhi,
24th Oct.1950.

Dear Sir,

Please refer to your letter dated the 14th October 1950 addressed to Sardarji. I am sending herewith a copy of the message which Sardarji has sent to the I.N.T.U.C. session at Jamshedpur. I hope this will serve your purpose.

Yours faithfully,,

(V.Shankar)

Shri H.N.Mota,
Mazdur Papers Ltd.
Jamshedpur.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Telegrams: "MAZDURAVAZ" Telephone No. 481.

Mazdur Papers Ltd.

Proprietors of
MAZDUR AVAZ (English Weekly)
MAZDUR AVAZ (Hindi Weekly)
AND
MAZDUR PRESS

JAMSHEDPUR.

11

Ref. No. 1524 *Dated* 14/10/50.

Respected Sardarji,

Since the labour movement in the country is passing through a difficult stage, and the interested parties are trying to mislead the innocent workers for achieving their selfish ends, we have decided to publish a Special Number of MAZDUR AVAZ on the occasion of the forthcoming I.N.T.U.C. Session which will attempt to enlighten public opinion in regard to certain outstanding problem confronting the working class and exhort the labour to do its duty by the country at this crucial hour in the economic history of India.

In order to make our voice more effective and our efforts more fruitful, I would earnestly request you to send a message to the Indian working class whichis in sore need of proper guidance and sound leadership.

I am pretty well conscious of your tremendous pre-occupations but, nevertheless, I hope you will spare a few moments to send a message which will go a long way in persuading the workers to follow the right path.

With respects,

Yours in service,

(H.N.Mota.)

Sardar Vallbh Bhai Patel,
Deputy Prime Minister,
1, Aurungzeb Road,
New-Delhi.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

INDIAN NATIONAL TRADE UNION CONGRESS

THIRD ANNUAL SESSION

JAMSHEDPUR.

12

The Chairman and members of the Reception Committee request Mr. & Mrs Sardar Vallabhbai Patel to attend the Open Session to be held at 5 P. M. on the 29th & 30th October, 1950, at Bari Nagar (Regal Maidan) Bistupur, Jamshedpur, under the presidentship of **SHRI KHANDUBHAI K. DESAI M.P.**

SHRI GULZARILAL NANDA, Deputy Chairman National Planning Commission, has kindly consented to inaugurate the Session.

22, K. ROAD,
JAMSHEDPUR.

MICHAEL JOHN,
CHAIRMAN,
Reception Committee

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

24.10.1950.

I send my best wishes for the success of the I.N.T.U.C. Session at Jamshedpur. More than at any other time in the history of the labour movement, it is essential that labour should be able to discriminate between its friends and foes. It is easy to win popular support and sympathy by submitting to popular clamour or by supporting demands or policies which might aim at the prosperity of a section of the community, but injure the cause of the country as a whole. It is quite different to stand up for labour's legitimate rights, serve its true interests and espouse its just causes. The I.N.T.U.C. stands for the latter. Strikes to test the leadership of labour are a negation of labour movement. They are merely a means of self-glorification which invariably obtain their deserts even though, in the process, labour grievously suffers. Therein does not lie the true interest of labour. Similarly, those who at this hour of crisis resort to practices which impede production are causing injury, both to the labour and to the country. The sovereign method of solving disputes is arbitration and once the machinery of adjudication or arbitration is set into motion, strikes are outlawed. In such circumstances, those who advise labour to launch or continue strikes are no friends of labour or of the country. My advice to labour reflects

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

today is, as it always has been, to put faith in peaceful and effective method of arbitration rather than in the doubtful and injurious means of illegal strikes. I have no doubt that if labour reflects calmly on its interests and its duty by the country it will realise that the path which a section of labour has been following recently leads to injury and disaster while the path which the I.N.T.U.C. has been following serves its true interests. It is also incumbent on every worker of the I.N.T.U.C. to live up to those principles and not to yield either in excitement or weakness of the moment to more convenient but more harmful methods which, in the long run, bring nothing but misery to the rank and file of workers. I hope the I.N.T.U.C. in its session at Jamshedpur will give a true lead to Indian labour and will once again emphasize that silent and solid work, conceived in a spirit of service, brings in more dividends than flashy and superficial submission to sentiment or malice.

(Vallabhbhai Patel)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

PHONE. 43817 TELE: SHRAMIK

Indian National Trade Union Congress 15

CENTRAL OFFICE

Personal

Ref. No.

17, QUEENSWAY.
NEW DELHI
28.3.50

Respected Sardar Sahib,

I have received a telegram from the Assam Branch of the I.N.T.U.C. I am sending the same to you in original for such action as you may deem proper.

With best regards,

Yours sincerely
Harihar Nath Shastri.

To
Hon'ble Sardar Vallabhbhai J. Patel
1, Aurangzeb Road
New Delhi

File

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

S. T. B.

1241

230

16

28 MAR 50

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

X MH SILCHAR 27 TRY ND 57 SRAMIK NEWDELHI =

ARMED MOB WITH PAKISTANI FLAG SHOUTING PAKISTAN ZINDABAD ATTACKED A TEAGARDEN ON 24 TH AAA SITUATION TAKING SERIOUS TURN DUE PROPAK ACTIVITIES AAA INNUMERABLE HOUSES BURNT FOODSTUFFS DESTROYED AAA RAMPRASAD CHOBEY VICEPRESIDENT ASSAM INTUC VISITED DISTRUBED AREA FOR RESTORING PEACE HIS HOUSE GUTTED YESTERDAY AAA KINDLY MOVE GOVT FOR IMMEDIATE STRONG ACTION = SRAMIK

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

TELEGRAMS: INTUC

The Indian National Trade Union Congress

TAMIL NAD BRANCH

PRESIDENT:
K. KAMARAJ

GENERAL SECRETARY:
G. RAMANUJAM

28, Tamil Sangam Road,
MATHURAI 17

24th September, 1950.

To
Hon. Sardar Vallabhai Patel,
Deputy Prime Minister, of India,
New Delhi.

Revered Sardar Saheb,

The Tamil Nad Provincial Branch of The Indian National Trade Union Congress has done excellent work among the working classes of South India during the last two and a half years, retrieving them completely from the stranglehold of the communists and communalists. It has waged several fights for labour, all along the constitutional and peaceful means and has come out victorious invariably in every one of those fights. It has today rallied round itself more than one and a half lakhs of organised workers in the province through about 130 trade unions, covering all the important industries, including agriculture.

It is proposed to hold the Second Annual Conference of the Tamil Nad Indian National Trade Union Congress at Mathurai on Sunday the 8th October, 1950. Your kind message of blessings, cheer and encouragement on the occasion of the Conference will greatly enthuse and inspire the young band of trade union workers in the province as also the labour in renewing and revitalising its faith in the constitutional and peaceful means of redressing all its grievances and in the orderly progress of the nation, for which the Indian National Trade Union Congress stands.

With respectful regards,

Yours sincerely,

G. Ramanujam

G. RAMANUJAM.
SECRETARY.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

178/A

This may please be put up in file. Shri Khandubhai must have some [illegible]

VP.

M
O
23/8

18

V. V. Dravid
Organising Secretary,
Indian National Trade Union Congress.

Shram Shibir
Snehalataganj
Indore 9. 9. 1950

My dear Shri Shankarji,

In continuation of our talk and my letter to revered Shri Sirdarji, I have to inform you that the Malwa Mill Management have sent Mr. Hemi (the Manager indirectly responsible for the recent trouble) on leave and it has been given to understand that he will not return. Thus the question is smoothly settled, thanks to our not making an issue of it and the Management appreciating that.

Another point: I am awaiting Shri Sirdarji's consent to our invitation to kindly inaugurate the Provincial Hindustan Mazdoor Sevak Sangh's new premises "Shram-Shibir" on 2nd of Oct '50 when he is visiting Indore. Will you kindly intimate us about the same and oblige!

Thanking you, Yours Sincerely
V. V. Dravid

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Shri V. Shankar
P. S. to — I. C. S.
Hon'ble Sardar Shri Vallabhbhai Patel
Deputy Prime Minister
1, Aurangzeb Road
New Delhi

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA